आधुनिक भारत में व्याप्त सामाजिक समस्याओं के प्रभाव

Raju Nain

M. A. (Sociology) from S. B. R. M. Govt. College, Nagaur during year 2021
B.Ed. from Maa Sharda B.Ed College, Deh,Nagaur during year 2018

सार

आधुनिक भारत में व्याप्त सामाजिक समस्याएं (जैसे गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, लैंगिक असमानता और जातिवाद) देश के विकास, मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक ताने-बाने पर गंभीर व दूरगामी प्रभाव डाल रही हैं।प्रमुख प्रभावआर्थिक असमानता और विकास में बाधा: गरीबी और भ्रष्टाचार के कारण संसाधनों का असमान वितरण होता है, जिससे अमीर और गरीब के बीच की खाई लगातार बढ़ती है और समावेशी विकास रुकता है।मानसिक तनाव और अपराध में वृद्धि: बेरोजगारी और असुरक्षा की भावना युवाओं में मानसिक स्वास्थ्य संकट, डिप्रेशन और छोटे-बड़े अपराधों तथा मादक द्रव्यों के सेवन को बढ़ावा देती है।लैंगिक हिंसा और असुरक्षा: महिलाओं के विरुद्ध हिंसा और लैंगिक असमानता समाज के आधे हिस्से को स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ने से रोकती है और सुरक्षा संबंधी गंभीर चिंताएं पैदा करती हैं।मानव संसाधन का ह्रास: अशिक्षा, बाल श्रम और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी के कारण देश की विशाल युवा आबादी एक कुशल मानव संसाधन के रूप में विकसित नहीं हो पाती है।सामाजिक विघटन और तनाव: जातिवाद और सांप्रदायिकता आपसी भाईचारे को कमजोर करते हैं, जिससे सामाजिक सौहार्द बिगड़ता है और राष्ट्रीय एकता प्रभावित होती है।

परिचय

भारत एक विशाल और विविधता से भरा देश है, जहाँ कई सामाजिक समस्याएँ विद्यमान हैं। कुछ प्रमुख सामाजिक समस्याएँ निम्नलिखित हैं:

1. गरीबी

भारत में बड़ी संख्या में लोग गरीबी में जीवन यापन करते हैं। यह समस्या शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करती है।[1,2,3]

2. बेरोजगारी

युवाओं में बेरोजगारी एक गंभीर मुद्दा है, जो आर्थिक विकास में बाधा डालती है और सामाजिक तनाव उत्पन्न करती है।

3. जातिवाद

जाति आधारित भेदभाव और असमानता आज भी समाज में व्याप्त है, जिससे सामाजिक समरसता प्रभावित होती है।

4. महिला सशक्तिकरण की कमी

महिलाओं के प्रति भेदभाव, घरेलू हिंसा, और शिक्षा तथा रोजगार में असमानता जैसी समस्याएँ मौजूद हैं।

5. शैक्षणिक असमानता

शिक्षा का समान अवसर न मिलना और गुणवत्ता की कमी समस्या है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र में।

6. बाल श्रम

कई बच्चे आर्थिक कारणों से स्कूल छोड़ कर मजदूरी करने को मजबूर हैं, जिससे उनकी शिक्षा बाधित होती है।

7. पर्यावरण प्रदूषण

सामाजिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डालने वाला एक बड़ा कारण, जैसे वायु और जल प्रदूषण।

8. भ्रष्टाचार
सामाजिक और प्रशासनिक क्षेत्रों में भ्रष्टाचार विकास की गति को प्रभावित करता है।
9. धर्म और नफरत के आधार पर हिंसा
धार्मिक दंगे और सामाजिक टकराव समाज में अस्थिरता लाते हैं।[4,5,6]
भारत एक विशाल देश है जहाँ विभिन्न धर्मों, जाति व वेश-भूषा धारण करने वाले लोग निवास करते हैं । दूसरे शब्दों में अनेकता में एकता हमारी पहचान और हमारा गौरव है परंतु अनेकता अनेक समस्याओं की जननी भी है ।

जाति, भाषा, रहन-सहन व धार्मिक विभिन्नताओं के बीच कभी-कभी सामंजस्य स्थापित रखना दुष्कर हो जाता है । विभिन्न धर्मों व संप्रदायों के लोगों की विचारधाराएँ भी विभिन्न होती हैं । देश में व्याप्त प्रांतीयता, भाषावाट, संप्रदायवाद या जातिवाद इन्हीं विभिन्नताओं का दुष्परिणाम है । इसके चलते आज देश के लगभग सभी राज्यों से दंगे-फसाद, मारकाट, लूट-खसोट आदि के समाचार प्राय: सुनने व पढ़ने को मिलते हैं ।

नारी के प्रति अत्याचार, दुराचार तथा बलात्कार का प्रयास हमारे समाज की एक शर्मनाक समस्या है । प्राचीनकाल में जहाँ नारी को देवी तुल्य समझा जाता था आज उसी नारी की भावनाओं को दबाकर रखा जाता है । पुरुष का अह उसे अपने समकक्ष स्थान देने के लिए विरोध करता है ।

हमारे पूज्य कवि तुलसीदास के अनुसार:

'ढोल, गँवार, सूद, पशु, नारी ।

सकल ताड़ना के अधिकारी ।।'

इससे पता चलता है कि तुलसीदास ने अपने युग की मान्यताओं को लिपिबद्ध किया है । समाज में स्त्रियों एवं शूद्रों की स्थिति बड़ी दयनीय थी । दहेज प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियाँ आज भी नारी को कष्टमय व असहाय जीवन जीने के लिए बाध्य करती हैं ।केवल अशिक्षित ही नहीं अपितु हमारे कथित सभ्य-शिक्षित समाज में भी दहेज का जहर व्याप्त है । प्रतिदिन कितनी ही भारतीय नारियाँ दहेज प्रथा के कारण मनुष्य की बर्बरता का शिकार हो जाती हैं अथवा जिंदा जला दी जाती हैं ।[7,8,9]

अंधविश्वास व रूढ़िवादिता जैसी सामाजिक बुराई देश की प्रगति को पीछे धकेल देती है । अंधविश्वास व रूढ़िवादिता हमारे नवयुवकों को भाग्यवादिता की ओर ले जाती है फलस्वरूप वे कर्महीन हो जाते हैं । अपनी असफलताओं में अपनी कमियों को ढूँढ़ने के बजाय वे इसे भाग्य की परिणति का रूप दे देते हैं ।

भ्रष्टाचार भी हमारे देश में एक जटिल समस्या का रूप ले चुका है । सामान्य कर्मचारी से लेकर ऊँचे-ऊँचे पदों पर आसीन अधिकारी तक सभी भ्रष्टाचार के पर्याय बन गए हैं। जिस देश के नेतागण भ्रष्टाचार में डूबे हुए होंगे तो सामान्य व्यक्ति उससे परे कब तक रह सकता है । यह भ्रष्टाचार का ही परिणाम है कि देश में महँगाई तथा कालाबाजारी के जहर का स्वच्छंद रूप से विस्तार हो रहा है ।

जातिवाद की जड़ें समाज में बहुत गहरी हो चुकी हैं । ये समस्याएँ आज की नहीं हैं अपितु सदियों, युगों से पनप रही हैं । इनके परिणामस्वरूप सामाजिक विषमता पनपती है जो देश के विकास में बाधक बनती है । इसके अतिरिक्त भाई-भतीजावाद व कुरसीवाद समाज में असमानता व अन्य समस्याओं को जन्म देता है ।

भारत की राजनीतिक समस्याओं के समाधान के लिए सामाजिक स्तर पर जद्दोजहद करने की आवश्यकता है क्योंकि

"जो भी हो सघंर्षों की बात तो ठीक है[10,11,12]

बढ़ने वाले के लिए यही तो एक लीक है ।

फिर भी दुःख-सुख से यह कैसी निस्सगंता !"

देश में अशिक्षा और निर्धनता हमारी प्रगति के मार्ग की सबसे बड़ी रुकावट हैं । ये दोनों ही कारक मनुष्य के संपूर्ण बौद्धिक एवं शारीरिक विकास में अवरोध उत्पन्न करते हैं। जब तक समाज में अशिक्षा और निर्धनता व्याप्त है, कोई भी देश वास्तविक रूप में विकास नहीं कर सकता है ।इन समस्याओं का हल ढूँढ़ना केवल सरकार का ही दायित्व नहीं है अपितु यह पूरे समाज तथा समाज के सभी नागरिकों का उत्तरदायित्व है । इसके लिए जनजागृति आवश्यक है जिससे लोग जागरूक बनें व अपने कर्तव्यों को समझें । देश के युवाओं व भावी पीढ़ी पर यह जिम्मेदारी और भी अधिक बनती है ।

आवश्यकता है कि देश के सभी युवा, समाज में व्याप्त इन बुराइयों का स्वयं विरोध करें तथा इन्हें रोकने का हर संभव प्रयास करें । यदि यह प्रयास पूरे मन से होगा तो इन सामाजिक बुराइयों को अवश्य ही जड़ से उखाड़ फेंका जा सकता है ।

विचार-विमर्श

भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता सांप्रदायिकता को एक राजनीतिक अवधारणा के रूप में जन्म देती है। इसका उपयोग धार्मिक और जातीय पहचान के आधार पर समूहों के बीच विभाजन, तनाव और फूट पैदा करने के लिए एक राजनीतिक प्रचार उपकरण के रूप में किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप सांप्रदायिक घृणा और हिंसा उत्पन्न होती है।[13,14,15]

प्राचीन भारतीय सभ्यता में विभिन्न धर्मों के लोग सौहार्दपूर्ण ढंग से सहअस्तित्व में थे।

संभवतः धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा को प्रस्तुत करने वाले पहले भारतीय पैगंबर बुद्ध थे। वहीं, अशोक जैसे राजाओं ने धार्मिक सहिष्णुता और सद्भाव की नीति अपनाई।

मध्यकालीन भारत में इस्लाम के आगमन के दौरान हिंसा की कुछ दुर्लभ घटनाएं भी हुईं, जैसे महमूद ग़ज़नी द्वारा हिंदू मंदिरों का विध्वंस और महमूद गोर द्वारा हिंदुओं, जैनियों और बौद्धों पर आक्रमण। यद्यपि धर्म ने लोगों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, फिर भी कोई सामुदायिक दर्शन या राजनीति नहीं थी।

अकबर और शेर शाह सूरी जैसे शासकों ने देश भर में प्रचलित अनेक संस्कृतियों और परंपराओं के प्रति सहिष्णुता की धार्मिक नीति अपनाई। हालांकि, औरंगजेब जैसे कुछ संप्रदायवादी राजा अन्य धार्मिक प्रथाओं के प्रति सबसे कम सहिष्णु थे।

इसकी उत्पत्ति ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रभाव और भारतीय सामाजिक वर्गों की आधुनिक घटना के रूप में प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप हुई।

हर पेशे में हमारा संविधान पुरुषों और महिलाओं को समान अधिकार प्रदान करता है। महिलाओं को अब मतदान करने, विरासत में संपत्ति प्राप्त करने और संपत्ति रखने का अधिकार है। वास्तव में, संविधान यह निर्धारित करता है कि सरकार को जनसंख्या के कमजोर वर्गों के हितों को विशेष ध्यान देकर बढ़ावा देना चाहिए। स्वतंत्रता के बाद से, महिलाओं के हितों को आगे बढ़ाने के लिए कई कानून बनाए गए हैं। ये नियम विवाह, संपत्ति उत्तराधिकार, तलाक और दहेज आदि से संबंधित हैं। 1976 का समान पारिश्रमिक अधिनियम यह सुनिश्चित करने के लिए पारित किया गया था कि पुरुषों और महिलाओं को समान कार्य के लिए समान वेतन मिले।

इन प्रतिबंधों के बावजूद, हमें अभी भी महिलाओं के प्रति बहुत अधिक पूर्वाग्रह देखने को मिलता है।

भारत में महिलाओं को स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार सहित कई क्षेत्रों में भेदभाव का सामना करना पड़ता है। दहेज की जिम्मेदारी लड़कियों पर होती है और शादी के बाद उन्हें माता-पिता का घर छोड़ना पड़ता है। इसके अलावा, माता-पिता अपने बुढ़ापे में सुरक्षा के लिए बेटे पैदा करना चाहते हैं। लड़कियां होने के कारण, कई बच्चियों का गर्भपात करा दिया जाता है, उन्हें छोड़ दिया जाता है, जानबूझकर उनकी उपेक्षा की जाती है और उन्हें कुपोषण का शिकार बनाया जाता है।[16,17,18]

परिणाम

भारत एक विविधतापूर्ण और घनी आबादी वाला देश होने के नाते कई सामाजिक समस्याओं का सामना करता है। इनमें से कुछ प्रमुख समस्याएं इस प्रकार हैं:

गरीबी

भारत में एक बड़ी आबादी गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रही है, जिसके कारण भोजन, स्वच्छ पानी और आश्रय जैसी बुनियादी आवश्यकताओं तक उनकी पहुंच अपर्याप्त है।

लैंगिक असमानता

प्रगति के बावजूद, भारत में लैंगिक असमानताएं अभी भी मौजूद हैं, जिनमें शिक्षा तक असमान पहुंच, महिलाओं के लिए सीमित आर्थिक अवसर और लिंग आधारित हिंसा से संबंधित मुद्दे शामिल हैं।

जाति प्रथा

जाति व्यवस्था, भले ही आधिकारिक तौर पर समाप्त कर दी गई हो, फिर भी भारतीय समाज को प्रभावित करती है। निम्न जाति के व्यक्तियों, जिन्हें अक्सर दलित कहा जाता है, के खिलाफ भेदभाव और हिंसा जारी है।

धार्मिक तनाव

भारत अनेक धर्मों का घर है, और धार्मिक तनाव और सांप्रदायिक हिंसा समय-समय पर उत्पन्न होती रहती है, विशेषकर हिंदुओं और मुसलमानों के बीच।[18,19,20]

बाल श्रम

भारत के कुछ हिस्सों में बाल श्रम अभी भी एक समस्या बनी हुई है, जहां बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के बजाय खतरनाक परिस्थितियों में काम करने के लिए मजबूर किया जाता है।

शिक्षा का अंतर

शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता में काफी अंतर है। ग्रामीण क्षेत्रों में कई बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से वंचित रखा गया है।

स्वास्थ्य सेवा संबंधी चुनौतियाँ

देश भर में स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच असमान है। ग्रामीण क्षेत्रों में अक्सर पर्याप्त चिकित्सा सुविधाओं का अभाव होता है, और स्वास्थ्य देखभाल संबंधी खर्च कई लोगों के लिए बोझ बन सकता है।

भ्रष्टाचार
राजनीति से लेकर सार्वजनिक सेवाओं तक, विभिन्न क्षेत्रों में भ्रष्टाचार व्याप्त है, जो आर्थिक विकास और सामाजिक प्रगति में बाधा डालता है।
पर्यावरण के मुद्दें
तीव्र शहरीकरण और औद्योगीकरण के कारण वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और वनों की कटाई जैसी पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न हुई हैं।[19,20]
जनसंख्या
भारत की जनसंख्या लगातार बढ़ रही है, जिससे संसाधनों और बुनियादी ढांचे पर दबाव बढ़ रहा है, जो इनमें से कई सामाजिक समस्याओं को और भी गंभीर बना सकता है।

निष्कर्ष
भारत की वर्तमान में मौजूद 10 प्रमुख समस्याएं नीचे दी गई हैं।

1. भ्रष्टाचार
2. निरक्षरता
3. शिक्षा प्रणाली
4. बुनियादी स्वच्छता
5. स्वास्थ्य सेवा प्रणाली
6. गरीबी
7. प्रदूषण
8. महिलाओं की सुरक्षा
9. बुनियादी ढांचा
10. बेरोजगारी [20]

संदर्भ
1. केस, होली (नवंबर 2016)। "सामाजिक प्रश्न," 1820-1920*" । आधुनिक बौद्धिक इतिहास । 13 (3): 747-775 । doi : 10.1017/S1479244315000037 । ISSN 1479-2443 । मूल से 23 अप्रैल 2023 को संग्रहीत । 23 अप्रैल 2023 को पुनः प्राप्त ।
2. मिल्स, सी. राइट (13 अप्रैल 2000)। समाजशास्त्रीय कल्पना । ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। ISBN 978-0-19-513373-84 नवंबर 2018 को इंटरनेट आर्काइव के माध्यम से प्राप्त किया गया ।
3. "वैलेंस मुद्दा: परिभाषा" . Answers.com. मूल से 24 मार्च 2014 को संग्रहीत । 8 मार्च 2013 को पुनः प्राप्त ।
4. नेल्सन, बारबरा जे. (15 अप्रैल 1986)। बाल शोषण को मुद्दा बनाना: सामाजिक समस्याओं के लिए राजनीतिक एजेंडा निर्धारण । शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस। ISBN 9780226572017मूल रूप से 19 अप्रैल 2023 को संग्रहीत । 21 नवंबर 2020 को पुनः प्राप्त ।
5. "रिपोर्ट डेस किंडरहिल्फ़सवर्क्स: जेडेस सेचस्टे काइंड लेब्ट इन आर्मट" । 14 मई 2009 को मूल से संग्रहीत । 12 सितंबर 2017 को लिया गया ।
6. "असमानता | Dictionary.com पर सामाजिक असमानता को परिभाषित करें" । Dictionary.reference.com। मूल से 6 मार्च 2016 को संग्रहित । 8 मार्च 2013 को पुनः प्राप्त ।
7. ब्रूस जे. बिडल और डेविड सी. बर्लिनर। "शैक्षिक नेतृत्व: निर्देशात्मक नेतृत्व से परे: संयुक्त राज्य अमेरिका में स्कूलों के लिए असमान वित्तपोषण" । Ascd.org। मूल से 28 दिसंबर 2012 को संग्रहीत। 8 मार्च 2013 को पुनः प्राप्त ।

8. स्कॉट, डायलन (23 अगस्त 2012)। "सार्वजनिक शिक्षा के लिए सबसे बड़ी समस्या? धन की कमी, सर्वेक्षण कहता है" । गवर्निंग डॉट कॉम। मूल से 5 मार्च 2013 को संग्रहीत । 8 मार्च 2013 को पुनः प्राप्त ।
9. ग्रूम, थॉमस। "फिर से जीतने के लिए, डेमोक्रेट्स को गर्भपात समर्थक पार्टी बनना बंद करना होगा।" 21 जनवरी 2018 को वेबैक मशीन पर संग्रहीत । द न्यूयॉर्क टाइम्स । 27 मार्च 2017।
10. उदाहरण के लिए: "वॉल स्ट्रीट जर्नल स्टाइल गाइड: खंड 23, अंक 1" । द वॉल स्ट्रीट जर्नल। 31 जनवरी 2010। मूल से 25 मई 2011 को संग्रहित । 4 नवंबर 2011 को पुनः प्राप्त ।
11. लॉर्न टेपरमैन; जेम्स ई. कर्टिस; अल्बर्ट क्वान (2007)। सामाजिक समस्याएं: एक कनाडाई परिप्रेक्ष्य । ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। पृष्ठ 35-39 । ISBN 978-0-19-542500-0.
12. "कनाडा में बेघर होना एक 'दीर्घकालिक' समस्या है: अध्ययन" । सीबीसी । मूल लेख 2 जनवरी 2019 को संग्रहित किया गया था । 28 नवंबर 2019 को पुनः प्राप्त किया गया ।
13. हेनरी, फ्रांसिस; गिन्ज़बर्ग, एफ़ी (1985)। काम किसे मिलता है? रोजगार में नस्लीय भेदभाव का परीक्षण । मेट्रोपॉलिटन टोरंटो की सामाजिक योजना परिषद, नस्ल संबंधों पर शहरी गठबंधन। टोरंटो: नस्ल संबंधों पर शहरी गठबंधन। मूल से 31 जुलाई 2019 को संग्रहीत । 31 जुलाई 2019 को पुनः प्राप्त ।
14. मोरो, एस., रूसो, सी., मेक्की-बेर्राडा, ए., टीसीएमआर और ÉRASME। (1999)। पॉलिटिक्स डी'इमिग्रेशन एट सैंटे मेंटल डेस रिफ्यूजीज: प्रोफाइल एट इम्पैक्ट डेस सेपरेशन्स फैमिलियल्स, नोवेल्स प्रैटिक्स सोशलेस, 11(2) - 12(1), 177-196।
15. लॉर्न टेपरमैन; जेम्स ई. कर्टिस; अल्बर्ट क्वान (2007)। सामाजिक समस्याएं: एक कनाडाई परिप्रेक्ष्य । ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। पृष्ठ 58-83 । ISBN 978-0-19-542500-0.
16. कनाडा, रोजगार और सामाजिक विकास (3 अक्टूबर 2016)। "कनाडा सरकार - वरिष्ठ नागरिकों के लिए कार्रवाई रिपोर्ट" । एईएम । मूल से 13 अगस्त 2019 को संग्रहीत । 28 नवंबर 2019 को पुनः प्राप्त ।
17. कनाडा सरकार, सांख्यिकी कनाडा (5 जून 2018)। "प्रजनन क्षमता: अवलोकन, 2012 से 2016" । www150.statcan.gc.ca । मूल से 13 अगस्त 2019 को संग्रहीत । 28 नवंबर 2019 को पुनः प्राप्त ।
18. जोंसन, हाकान; लार्सन, अन्निका तघीज़ादेह (2009)। "विकलांगता सक्रियता और नीतियों में वृद्ध लोगों का बहिष्कार - अनजाने में उम्रवाद का एक मामला?" । जर्नल ऑफ एजिंग स्टडीज । 23 : 69-77 . doi : 10.1016/j.jaging.2007.09.001 । 28 नवंबर 2019 को पुनः प्राप्त किया गया ।
19. "बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार" . एईएम . 30 जुलाई 2009. मूल से 13 अगस्त 2019 को संग्रहीत . 28 नवंबर 2019 को पुनः प्राप्त .
20. लॉर्न टेपरमैन; जेम्स ई. कर्टिस; अल्बर्ट क्वान (2007)। सामाजिक समस्याएं: एक कनाडाई परिप्रेक्ष्य । ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। पृष्ठ 137-162 । ISBN 978-0-19-542500-0.